# योग्यता, पुण्य और पाप (Desert, Merit and Demerit)

कर्त्तव्य या अकर्त्तव्य के आचरण से चरित्र जिस गुण का अर्जन करता है उसे ही योग्यता (Desert) कहा जाता है। योग्यता दो प्रकार की हो सकती है – पुण्य (merit) या पाप (demerit) पुण्य भावात्मक योग्यता है और पाप निषेधात्मक पर दोनों ही योग्यता के ही द्योतक है। पुण्य चरित्र की श्रेष्ठता का चिह्न है, पाप चरित्र के नैतिक पतन का। उचित कर्मों के करने से व्यक्ति के चरित्र के उत्कर्ष या अच्छाई में जो वृद्धि हो जाती है, वही पुण्य है। जब कोई व्यक्ति कर्त्तव्य का पालन करता है तो वह नैतिक योग्यता कमाता है। इसी को पुण्य कहा जाता है। जब वह अनुचित कर्म करता है तो वह नैतिक योग्यता कमाता है। इसी को पुण्य अनुचित कर्म के करने से व्यक्ति के चरित्र के नैतिक मूल्य में जो क्षय होता है, वही पाप है। अनुचित कर्म के करने से व्यक्ति पुण्य और पाप की मात्राएँ होती है। यदि नैतिक योग्यता की वृद्धि अधिक हुई है तो हम अधिक पुण्य का अर्जन करते है और कम वृद्धि विचारा जाता है कि प्रबल स्वार्थ की भावना पर जितनी विजय प्राप्त की जाय उतना अधिक पुण्य होता है। पुण्य की मात्रा उतनी ही अधिक होगी जितनी मात्रा में लोभों पर विजय प्राप्त की जाय